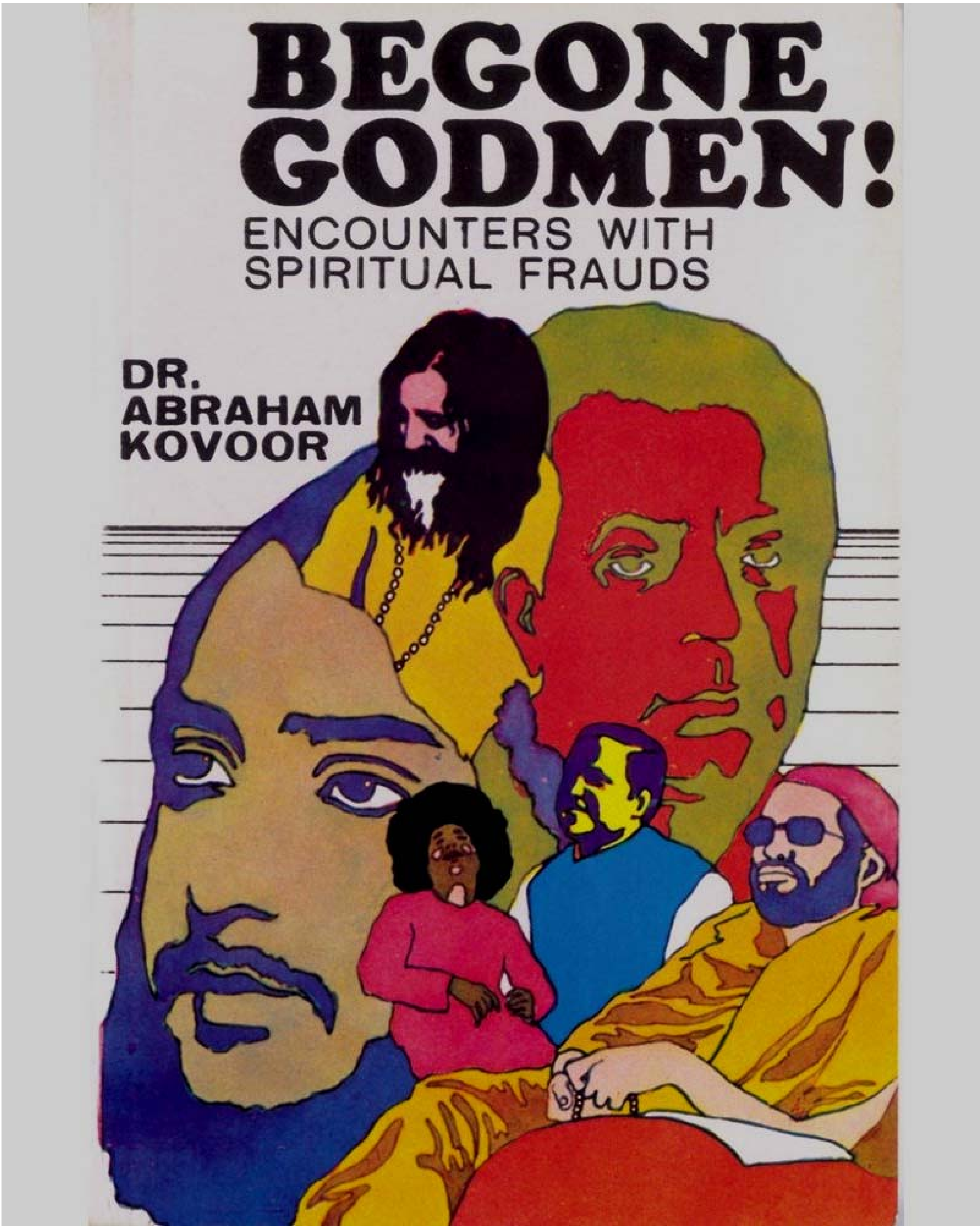

BEGONE GODMEN!
ENCOUNTERS WITH SPIRITUAL FRAUDS
DR. ABRAHAM KOVOOR

अध्याय ११
बाइबल एक खतरनाक नैतिक मार्गदर्शिका है
(BIBLE IS A DANGEROUS MORAL GUIDE)

अखिल–श्रीलंका बौद्ध समिती (ऑल–सीलोन बुद्धिस्ट काँग्रेस) की मांग है कि देश के नवयुवकों को नैतिकता एवम शिष्टाचार का मार्गदर्शन करने हेतु पाठशालाओं में धार्मिक ज्ञान देना अत्यंत ज़रूरी है। विभिन्न ख्रिस्ती (ख्रिस्टियन) संघठनाओं के अधिकारिओं का भी यह मांग हैं कि ख्रिस्ती विद्यार्थिओं को बाइबल पढ़ाया जाए।

पवित्र बाइबल कही जानेवाली यह ग्रंथ नैतिकता और शिष्टाचार सिखाने के पथ पर कितना हानिकारक है यह दिखाने के लिये मैं यह लिख रहा हूँ। इस दुनिया के करोड़ो ख्रिस्ती (Christian) लोग, किसी ठोस सबूत के बिना, यह मानते है की बाइबल ईश्वर का वाक्य (वर्ड ऑफ़ गॉड) है। ईश्वर है इसका ही कोई सबूत नही है, फ़िर बाइबल ईश्वर का वाक्य है यह कोई कैसे मान सकता है? अगर ईश्वर है यह साबित भी हो जाए, फ़िर भी, उसने ही बाइबल की रचना किया यह कहने के लिए इसका कोई आधार नही है।

अकेला बाइबल ही ऐसा ग्रंथ नही है जिसको ईश्वर का वचन होने का दावा किया जाता हो। मुसलमान भी दावा करते हैं कि उनका क़िताब – अल् ख़ुरान् – भी अल्लह द्वारा दिया गया था।

बाइबल के नैतिक उपदेश, उसके कानून के न्याय, ऐतिहासिक त्रुटियाँ, वैज्ञानिक गलतियाँ, और मूर्खता से भरे तत्त्वज्ञान के वजह से यह ग्रंथ २०वी सदी के लोगों को स्वीकार करणे लायक नही है। बाइबल के प्रेरणाओं के बात ही कैसे कर सकते है, जब कि हम जानते है कि बाइबल सब कुछ गलत सिखाता है? असलियत में, बाइबल एक ईश्वरीय ग्रंथ होने की बात तो यहुदी (Jewish) और ख्रिस्ती (ख्रिस्टियन) पादरीओं द्वारा आविष्कार किया गया हुआ सफ़ेद झूठ है। बाइबल तो मानव द्वारा उत्पन्न किया गया किताब है, और नैतिकता के पथ पर यह किताब बहुत हानिकाराक मार्गदर्शिका है, इसी से पता चलता है कि बाइबल कोई ईस्वर द्वारा दिया हुआ किताब नही है।

आइयें बाइबल के कुछ नैतिक शिक्षाओं पर नज़र डालते है।

ईमानदारी

सद्गुणों में सत्य–बोलना सब से मूल्यवान सद्गुण है, जिसकी सभी आशा करते है। पर बाइबल धोखादाडी और झूठ–बोलने को बढ़ावा देता है। यिर्मयाह (Jeremiah) के २०वे अध्याय के ७वे वचन में, लेखक शिकायत करता है कि, "हे ईश्वर तुने मुझे धोखा दिया है". ४थे अध्याय के १०वे वचन में, यिर्मयाह (जेरेमिय्या) ईश्वर को धोखादाडी करने का लांछन लगाता है। वह कहता है, "ओह! प्रभु, यकीनन तूने यरूशलेम के लोगों के साथ धोखा किया है ।"

राजा के पहले क़िताब (1st King) के २२वे अध्याय में आश्चर्य–चकित करणेवाला ईश्वरीय झूठापन देखने को मिलता है। बाइबल कहता है, "प्रभु ने कहा कि तेरा अहाब को बहकाना सफल होगा... तो अब सुन प्रभु ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं के मुह में एक झुठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है,"। अपने बच्चों के उस उम्र में जब उन्हे अच्चे संस्कार दिये जाते है, ऐसे वख़्त कोई भी बुद्धिमान व्यक्ती अपने बच्चे को परमेश्वर द्वारा

किये जानेवाले धोखा–दाडियों के बारे में सिखाना नही चाहेगा। इतने छोटे लेख में बाइबल के इतने अनगिनत झूठापन और गलतियाँ प्रस्तुत करना संभव नही है। उत्पत्ति (Genesis) के क़िताब में दिये गये जल–प्रलय के कहानी तो झूठ और बेतुकी बातों से भरी हुई है। उत्पत्ति के ७वे अध्याय में कहा गया है कि, "४० दिन और ४० राते बारीश हुई। १५ हाथ (cubit, क्यूबिट) के इतना बारीश गिरा और पर्वतें डूब गये।"

एक हाथ (क्यूबिट) यानी १ कदम (१ फ़ूट) और ६ उंगलियाँ (६ इंच) होता है, इसका मतलब यह होता है कि बाड केवल साडे–बाईस कदम (२२.५ फ़ीट) गहरा था। एवरेस्ट पर्वत की ऊँचाई २९,०२२ कदम (फ़ूट) है और अरारत पर्वत की ऊँचाई १७,२६० कदम (फ़ूट) है। देखिये ईश्वर द्वारा दिये गये बाईबल कितना झूठ कहता है कि केवल साडे–बाईस कदम (फ़ूट) गहरे पानी में सारें पर्वत डूब गये। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति बाईबल के इस झूठ को मान सकता है क्या कि पृथिवी के महाकाय जानवर, उदाहरण के लिये डाईनोसौर, मैम्मन्थ और हाँथी इत्यादि एक १८ उंगलियो (इंच) के चतुर्भुज द्वार (या खिडकी) में से नाव के अन्दर जा पाये?।

आईये अब नये नियम (New Testament) को देखते है, कहा जाता है कि इस क़िताब में बुराइयों और गलतियों के छिंटे भी नही है। रोमियों (Romans) के ३रे अध्याय में सन्त पौलुस ने बडे चमत्कारिक तरिके से झूठ बोले जाने कि वक़ालत की है। वह कहता है कि, "मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उसकी महिमा के लिये अधिक प्रकट हुई."।

कुरिन्थियों के दूसरी पत्री (2 Corinthians) में पौलुस और भी स्वीकर करता है कि वह उसके प्रवचनों में झूठ का भरपुर उपयोग करता है। वह कहता है कि, "कुटिल होने के वजह से, तुम्हें धोखा देकर फ़ंसा लिया है"। पौलुस के अनुसार ईस्वर के सेवा के लिये झूठ भी बोला जाये तो उसमें कोई बुराई नही है। परन्तु नैतिकता सत्यता/सच्चाई की मांग करती है। जो क़िताब झूठ बोलना और बुराईयों का समर्थन करती है वह एक ख़तर्नाक नैतिक मार्गदर्शिका है।

परमेश्वरके लिये कितना शर्मनाक बात है कि वह मूसा (Moses) को जानबूझकर फिरौन (Pharaoh) से झूठ बोलने को कहता है । निर्गमन के ५वे अध्याय में हमें पढ़ने को मिलता है कि: मूसा और हारून (Aaron) जाकर फिरौन से कहा, "इस्राएल का प्रभू परमेश्वर यों कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे निर्जन प्रदेश में मेरे लिये पर्व करें, हमे जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने प्रभू परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाएँ" । यहाँ हमे देखने को मिलता है एक असहाय परमेश्वर जो फिरौन से सोचा–समजा झूठ बोलकर अपने लोगों को ग़ुलामी से निकालने का प्रयास कर रहा है । क्या इस्राएली लोग सचमुच तीन दिनों के लिये बाहर जाते, या वहाँ से भाग जाते फ़िर कभी न लौटने के लिये?

दुनिया को जितनी सच्छाई कि ज़रूरत है उतनी हि ज़रूरत ईमनदारी की भी है । तथाकथित पवित्र बाइबल तो ठग बनने को, चोर बनने को और अपने साथी को बरबाद करनेवाला बनने को सिखाती है । निर्गमन के ३रे अध्याय मे हमे अपने पड़ोसियों को लूटने का परमेश्वर का ख़ास निर्देश है । परमेश्वर कहता है कि, "मैं मिस्रियों से अपनी प्रजा पर अनुग्रह करवाऊंगा; और जब तुम निकलोगे तब छूछे (खाली) हाथ न निकलोगे। वरन् तुम्हारी एक–एक स्त्री अपनी–अपनी पड़ोसिन, और अपने–अपने घर की पाहुनी से सोने–चांदी के गहने, और वस्त्र उधार मांग लेगी, और तुम उन्हे अपने बेटों और बेटियों को पहिराना । इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे ।" १२वा अध्याय कहता है: "इस्राएलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियों से

सोने–चांदी के गहने और वस्त्र उधार मांग लिये । और प्रभू ने मिस्रीयों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया, कि उन्हों ने जो–जो उधार मांगा वह सब उनको दिया । इस प्रकार इस्राएलियों को लूट लिया ।"

क्या हम अपने बेटें और बेटियों को ये सिखायेंगे कि किस तरह उधार मांगने के बहाने से लोगों को लूटे? भले ही बेईमानी बाइबल के परमेश्वर के राय से नैतिक हो, हमे श्रीलंका में अपने बच्छों को इस तरह की अनैतिक खयालों को सिखाने की अनुमति नही देना चाहिये । जिन ख्रिस्तीयों (ईसाइयों) को उनके ग्रंथों के ज़रिये इस तरह के अनैतिकतायें सिखाई जाती है, उन लोगों में ईमानदारी और सच्छाई की उम्मीद कैसे करे?

यह दिखाई देता है कि बाइबल के परमेश्वर को झूठे वादें करने में कोई हिचकिचाहट नही होती । उत्पत्ति के ४६वे अध्याय के ३रे वचन में कहा जाता है कि परमेश्वर इस्राएल से बातें की । "याकूब! मैं तेरे पिता का परमेश्वर हूँ, तू मिस्र में जाने से मत डर; क्योंकि मैं तुझ से वहाँ एक बड़ी जाति बनाऊंगा ।" असलियत में क्या हुआ? बड़ी जाति के बनने के बजाय, उसके वंशज मिस्र में गुलाम बने । क्या ऐसा है येहोवा और क्या ऐसा सबजाननेवाला होता है?

गुलामी

गुलामी और गुलामों का व्यापार मानव इतिहास का सबसे घिनोना अपमानजनक अध्याय है । गुलामी लाखों स्त्रीयों और पुरुषों को इनसान कि तरह जीने के अधिकारों से वंछित करता है । गुलामी इनसानों के जीवन को सब से बत्तर तक़लीफ़ों से भर देता है । बाइबल के लिखे जाने के पूर्व, पृथ्वी के उन हिस्सों में जहाँ इनसानों का बसेरा था, वे गुलामी से सड रहे थे । फ़िर बाइबल आया, लेकिन बाइबल का क्या कहना था ऐसे पीडाजनक अभिश्राप के बारे में जो इनसानों का जीवन जानवरों से बत्तर बना रही थी ? हमे तो बतलाया जाता है कि बाइबल तो परमेश्वर का, ज्ञान और प्रेम का, संदेश है । पर क्या बाइबल मानवीय स्वतंत्रता का आह्वान करती है? ठीक उसके विपरीत, बाइबल तो गुलामी को मान्यता प्रदान करती है । निर्गमन के २१वे अध्याय में, गुलामों को रखनेवाले एक मालिक को परमेश्वर सलाह देता है कि, "जब तुम कोई इब्री (Hebrew) गुलाम खरीदोगे, तब वह छह वर्ष तक गुलामी करता रहे, और सातवे वर्ष स्वतंत्र होकर सेंतमेंत चला जाए । यदी वह अकेला आया हो, तो अकेला ही चला जाए । यदी पत्नी सहित आया हो, तो उसके साथ उसकी पत्नी भी चली जाए । यदी उसके मालिक ने उसको पत्नी दी हो, और उस से उसके बेटें और बेटियां पैदा हुए हो, तो उसकी पत्नी और बच्छें उस मालिक के ही रहें, और वह अकेला चला जाए । लेकिन अगर वह गुलाम स्पष्ट कहे, कि "मै अपने पत्नी और बच्छों से प्यार करता हूँ । इसलिये मैं आज़ाद होकर नही जाऊंगा"; तो उसका मालिक उसको न्यायाधीशों के पास लाए; फ़िर उसको दरवाज़े के पास या बाज़ू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करे; तब वह सदा उसकी गुलामी करता रहे ।" इस तरह, बाइबल के इन्साफ़ के तहद, अगर एक गुलाम अपने बीवी और बच्छों के साथ रहना चाहता है तो उसे ताउम्र गुलाम बने रहना होगा । परमेश्वर इसकी मंजूरी देता है कि मालिक अपने गुलाम का कत्ल–ए–आम कर सकता है और उसका उसे कोई सज़ा नही । इसी अध्याय में यह भी लिखा है कि, "अगर कोई अपने गुलाम या दासी को सोंटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दंड दिया जाए । लेकिन अगर वह एक–दो दिन जीवित रहे, तो उसके मालिक को दंड न दिया जाए; क्योंकि वह गुलाम उसका धन (अमानत) है ।" क्या एक सभ्य या शिष्टाचारी व्यक्ती ऐसे सीख को मान सकता है कि एक व्यक्ती दूसरे व्यक्ती का अमानत है? नया नियम (न्यू टेस्टामेंट) तो पुराने नियम (ओल्ड टेस्टामेंट) का दृढ समर्थन करता है कि गुलामों के हाथों–पैरों में

ज़ंजीरें डाली जाये । इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री (Ephesians) के ६ठे अध्याय के ५वे वचन में, संत पौलुस कहता है, "सेवको, जो लोग तुम्हारे सांसारिक मालिक है, उनका हुख़्म, डर से और कांपते हुए मानो...।" गुलाम को आदेश दिया गया है कि वह अपने मालिक के पैरों तले झुके और कांपते हुये रेंगे ।

कट्ठरपंती और असहिष्णता

इस २०वी सदी में जहाँ हम लोग राजनैतिक और धार्मिक स्वतंत्रता के लिये लड रहे है, पर बाइबल का परमेश्वर ऐसे स्वतंत्रता नही देता । जो लोग अपना मज़हब बदलने का इच्छ करते है उन्हे बाइबल तो सज़ा–ए–मौत देती है । व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy) के १३वे अध्याय में जो हमे पड़ने को मिलता है उससे अधिक क्रूरता क्या हो सकती है? "अगर तेरा भाई, बेटा, बेटी या तेरी प्राणप्रिय बीवी गुप्तरूप से एकांत में तुझे बहका–फ़ुसलाने लगे कि, आओ हम दूसरे एक परमेश्वरकी आराधना करें, तो तू उसका निश्चय से कत्ल करना, उस पर ऐसा पत्थरवाह करना कि वह मर जाये ।" इसका मतलब है कि जो लोग जेहोवा के अलावा दूसरे परमेश्वरकी इबादत करते है उन्हे मार देना है । इस तरह के आदेश ही मूल कारण है जिनके वजह से मज़हब के नाम पर जनसंहार (खूनखराबा) किया जाता है ।

कुछ ऐसे खैस्तव (ईसाई) है जो कहते है कि नया नियम (न्यू टेस्टामेंट) धार्मिक स्वतंत्रता और सहनशीलता के पक्ष में है । पर सच्छाई तो यह है कि, जितना पुराना नियम (ओल्ड टेस्टामेंट) असहिष्ण (असहनशील) है उतना ही नवा नियम भी है । गलातियों (Galatians) के नाम पौलुस के पत्र के १ले अध्याय के, ९वे वचन में संत पौलुस घोषना करता है कि, "जो तुमने स्वीकार किया है उसके अलावा अगर कोई दूसरा सुसमाचार (गोस्पेल) सुनाता है तो वह व्यक्ती श्रापित हो ।" लुका (Luke) के १९वे अध्याय में यीशु, तथाकथित परमेश्वर का पुत्र, कहता है कि, "मेरे दुश्मन जो यह नही चाहते कि मैं उन सब पर राज करू, उन्हे यहाँ लाओ और मेरे सामने उनका कत्ल करो ।" मरकुस (Mark) में कहता है कि, "जो ईसाई (मज़हब) कबूल करे और बपतिस्मा कराए उसे बचाया जायेगा, बाकी सब दोषि ठहराये जायेंगे ।" गिरजाघर तो लोगों के आत्माओं को बचाने के लिए आतुर था, लेकिन यह बचाव ईसाईओं (ख्रिस्तिओं) के अलावा औरों के लिए नही था । गिरजाघर की यह जिम्मेदारी थी कि वह सबको ईसाई बनने के लिये बजबूर करे । गैरख्रिस्तीओं (जो ईसाई नही है उन्हे) शारीरिक यातनाएँ देना उन पर रहम (अनुकंपा) करना था जिससे उनके आत्माओं को मौत के बाद के जहन्नुम के यातनाओं से बचाया जा सके ।

अत्याचार करना

सोचने की शक्ती कितनी भी हो पर यह सोच नही सकते बेगुनाह औरतें और मर्दों को कितनी पीडा (तकलिफ़) दिया गया है, क्योंकि, बाइबल एक पीडादायक ग्रंथ है, और इस लिये कि, ईसाई हमेशा से अत्याचारी मज़हब रहा है । सेकडों वर्षों से कड़ी यातनायें देने के अलग–अलग रास्तों और साधनों का आविष्कार करने में ईसाई मज़हब अपनी होशियारी दिखाते आई है । उनका यातनाओं का मार्गदर्शिका हमेशा बाइबल थी । बाइबल के सिक्षा का अनुसरण से करोडों लोगों का जनसंहार (हत्याकांड) किया गया ।

नरभक्षन

नरभक्षन (इनसान दूसरे इनसान को खाना) इससे बड़कर एक सभ्य व्यक्ती के लिये और क्या घृणास्पद हो सकता है? अंधकार युग में, भले ही आफ्रिका के और पैसिफ़िक द्वीप–समुह के जंगली लोग, कबिलों के युद्ध में मारे गये अपने दुश्मनों के मांस को खाते थे, लेकिन, परमेश्वर द्वारा प्रेरित बाईबल तो अपने चहेते लोगों कि मांस खाने का आदेश देता है । व्यवस्थाविवरण (ड्यूटेरोनोमी) के २८वे अध्याय में ऐसा कहा गया है कि, "तू अपने खुद पैदा किये हुए बेटें और बेटियों का मांस खायेगा । तुम्हारे (लोगों के) बीच के बच्छों का, मुलायम और नाज़ुक औरतों का मांस खायेगा ।" यिर्मयाह किताब के १९वे अध्याय में कहा गया है कि, "मैं उन्हे उनके बेटों का मांस खिलाऊंगा, उनके बेटिओं का मांस खिलाऊंगा, हर एक का मांस खिलाऊंगा, दोस्तों का मांस खिलाऊंगा..."। और यही भयानक चीज़ को दोहराया गया है लैव्यव्यवस्था के २६वे अध्याय में ।

बेगुनाओं का हत्याकांड

१ शमूएल के १५वे अध्याय में पारिद जेहोवा के पिशाचतुल्य (हैवानी) आदेश से ज़्यादा पापचरित (ज़ुल्मी) और कुछ भी नही हो सकता कि, "अब जा और अमलेकियों को मार दो, और जो कुछ उनका है बिना रहम किये पूरी तरह से नष्ट कर दो, दोनों औरतों और मर्दों को, शिशू और दूधपिउवा बच्छे को, गाय–बैल और भेड़–बकरी को, ऊंट और गधे, सब को मार डाल ।" व्यवस्थाविवरण के २०वे अध्याय में परमेश्वर आदेश देता है कि, "तू ऐसे किसी भी चीज़ को ज़िंदा नही छोड़ना जो साँस लेता है ।"

कनान के सरें प्राणियों को नष्ट करना अगर जेहोवा के लिये नैतिक (सदाचार) है , तो हीरोशीमा और नागासाकी के सारें प्राणियों को मारने के लिये, या विएत नाम में रासायनिक युद्धनीती अपनाने के लिये हम अमेरिका के लोगों को कैसे दोषि ठहरा सकते है, जो उसी (बाइबल के) परमेश्वर की इबादत (पूजा) करते है ।

गलत–काम करनेवालों को दंडित करने का ईसाई परमेश्वर का तरीका है कि उनके छोटे–छोटे बच्छों को जान से मारना, और उनके बीवियों को गैरों से उपभोग कराना । २ शमूएल के १२वे अध्याय में परमेश्वर कहता है कि, " सुन, मैं तेरे घत में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा । तेरे बीवियों को तुझ से छीन कर तेरे सामने दूसरे को दूंगा, और वह दिन–दुपहरी में तेरी बीवियों से कुकर्म करेगा । सब इस्राएलियों के सामने दिन–दुपहरी कराऊंगा ।" अगर कुछ बत्तर हो सकता है तो इससे बत्तर नही होगा कि परमेश्वर माँ–बाप को आदेश देता है कि वे अपने ज़िद्दी बच्छों को जान से मार दे । व्यवस्थाविवरण के २१वे अध्याय में, कानून करार करता है कि, " यदी किसी के हठिला और दंगेबाज़ बेटा हो, जो अपने माँ–बाप की बात न माने, लेकिन ताड़ना देने पर भी उनकी न सुने, तो उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फाटक के पास नगर के बुज़ुर्गों के पास ले जाएँ । और उनसे कहें कि हमारा बेट हठिला और दंगेबाज़ है, यह हमारी बात नही सुनता । यह उड़ऊ और पियक्कड़ है । तब नगर के सब मर्द लोग उसको पत्थरों से मार–मार के मार डलें ।"

कामुक अश्लीलता और लैंगिक विकृती

अश्लीलता और लैंगिक अनैतिकता के लिये पूरे विश्व में पवित्र बाइबल से खराब कोई साहित्य नही है । यीशु मसीहा के अनुसार यह नैतिक है कि कोई अपने भाई के विधवा के साथ हमबिस्तर हो, अगर उस विधवा को कोई बच्छे न हो तो । मर्कूस के १२वे अध्याय में हम पढ़ते है कि, "मूसा ने हमारे लिये लिखा है

कि अगर किसी का भाई बिना संतान मर जाए, और उसकी बीवी रह जाए, तो उसका भाई उसकी बीवी को रख ले और अपने भाई के लिये वंश का बीज बढ़ाए ।"

जबकी यहूदी पुराने नियम का ही दृढता से पालन करते है, पर यह एक अच्छी बात है कि, वर्तमान के इस्राएली यहूदी जेहोवा के आदेशों में विलिप्त अनैतिकता को देख पा रहे है । १९७२ के जनवरी महिने में, एक ४१ वर्षिय इस्राएली, निस्सीन शारबी, को टेल आवीव के कैदखाने में डाल दिया गया क्योंकि उसने, जेहोवा के आदेशोंका दृढता से पालन कर, अपने भाई के बिनबच्छेवाली विधवा से शादी कर ली थी ।

भले ही परमेश्वर उनके पक्ष में है जो अपने भाई के विधवा के साथ हमबिस्तर होते है, पर वह उन माँ–पाप के पक्ष में नही है जो अपने बेटियों का शादी कर कन्यादान करते है । १ कुरिन्थियों के ७वे अध्याय के ३८वे वचन में परमेश्वर कहता है, "अतः जो अपनी कन्या का विवाह कर देता है वह अच्छा करता है, परन्तु जो विवाह नहीं करता वह और भी अच्छा करता है ।"

जब ओनान को अपने भाई के विधवा के साथ हमबिस्तर होने को विवश किया गया था, तब वह ऐसे अवैध बच्छे को पैदा करने के लिये अनिच्छुक था । तो उसने खंडित मैथुन (यानी "बच्छा न होने के लिये, संभोग करके योनी के बाहेर ही वीर्य को गिराना") का प्रयोग किया । इसलिए परमेश्वरने उसे जानसे मार दिया, इसलिये नही कि उसने अनैतिक काम किया, बलकि इसलिए कि उसने (संभोग पूरा होने से पहले ही लिंग को) बाहेर निकाल लिया । १ कुरिन्थियों के ७वे अध्याय में परमेश्वर कहता है, " अगर किसी पुरुष को ऐसा सोचता है कि वह उसके कन्या के साथ अनुचित बरताव कर रहा है, और उसकी जवानी ढल चली है, उसे अपनी जरूरत पूरी कर लेने दो, वह पाप नही कर रहा है ।" पाठशालाओं में बाइबल को सिखा कर क्या हमे हमारे देश में संबन्धीय मैथुन (इंसेस्ट) का प्रचार करना है ?

परमेश्वर तो वेश्यावृत्ती और बेवफ़ाई (व्यभिचार) को बढ़ावा देता है । होशे के ४थे अध्याय में परमेश्वर अपने चुनिंदा लोगों से कहता है, "जब तुम्हारी बेटियाँ छिनाला (वेश्यावृत्ती) और तुम्हारी पत्नियाँ व्यभिचार करें, तब मैं उनको दंड नही दूंगा ।"

सबके सामने अश्लील प्रदर्षन करना सभ्य देश में एक दंडनीय अपराध है, लेकिन परमेश्वर का औरतों को दंडित करने का विधी तो ऐसा है कि उन्हें सब लोगों के सामने नग्न करके खडा किया जाएँ । यशायाह के ३रे अध्याय में कहा गया है, "और परमेश्वर उनके गुप्त अंगों को खोलके रख देगा ।"

जेहोवा के अनुसार औरतें, जिने पुनर्विचार के वजह से बनाया था, केवल चल संपत्ती है, जो पुरुषों के लैंगिक सुख के उपभोग के लिए होते है, और जब वे सुख उपभोग करने लायक न रहे तो उनका त्याग कर दिया जाय । व्यवस्थाविवरण के २१वे अध्याय में परमेश्वर आदेश देता है कि, "जब अगर तू बंदियों में किसी सुंदर औरत को देखकर उस पर मोहित हो जाओ, और उसे अपने पत्नी के रूप में लेना चाहो, तो उसे अपने घर के अंदर ले जाना, उसके बाद तू उसके पास जाना, और तू उसका पती और वह तेरी पत्नी होगी । फ़िर अगर वह तुझ को उसमें कोई मज़ा न आये, तो जहाँ वह जाना चाहे वहाँ उसे जाने देना ।"

इस्राएलिओं ने कनान के वासीओं के साथ जितने भी आक्रमक युद्ध किये थें, उन सब में परमेश्वर की यह मांग थी कि सारे कुँवारी लडकियों को ज़िंदा लाया जाए और खुदको भी उन में से हिस्सा दिया जाये । गिनती के ३१वे अध्याय में परमेश्वर आदेश देता है कि, "सो अब बालबच्छों में हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियाँ पुरुष के साथ

सोई हो, उन सब को मार दो । लेकिन बालबच्छों में जितनी लडकियों ने पुरुष से सहवास नही किया हो, उस सब को तुम अपने लिये जीवित रखो । " इस्राएलिओं ने भी परमेश्वर के आदेश अनुसार किएँ । वे बत्तीस हज़ार कुँवारिओं को ले आयें, उनमे से बत्तीस को परमेश्वर को नज़राने के रूप में अर्पित कर दिया । इस तरह परमेश्वर का कुँवारीओं में, १ प्रती हज़ार, के हिसाब से नज़राना था । हमे यह देख ने को मिलता है कि जेहोवा अपने बनाएँ प्राणिओं के नग्न रूप पर नज़रें डाल कर नयन सुख लेने का शौकीन है । २ शमूएल के ६ठे अध्याय में हमे पढ़ने को मिलता है दाऊड राजा के बरे में, जो परमेश्वर का लक्त–ए–जिगर था, कि किस तरह वह केवल जेहोवा को प्रसन्न करने के लिये औरतों के सामने नंगा नाच किया था ।

संकल्पित धार्मिक हत्याकांड

हिट्लर द्वारा यहूदिओं का बहुसंख्या में खूनखराबा और अत्याचार, और पूर्वी पाकिस्तान में किया गया याह्य खान का मज़हबी खूनखराबा यह सब येहोवा द्वारा मिस्र और कनान के लोगों पर किये गये मज़हबी हत्याकांडों और क्रूरताओ के सामने फ़ीके पढ़ जाते है । जब फिरौन राज़ी था इस्राएलिओं को रिहा करने के लिये, परमेश्वर ने उसके दिल को कठोर कर उसके निश्चय को बदल दिया, एक बार नही बलकि कई बार । रहनुमान कहलानेवाले, परमेश्वर ने (इस्राएलिओं के साथ) ऐसा विश्वासघाती बरताव क्यों किया ? सिर्फ़ इस बहाने के लिये जिससे वह (मिस्र के) ज़्यादा–से–ज़्यादा बेगुनाह औरतों और बच्छों, और उनके पालतू जानवरों तक कों मार सके ? इन बेज़ुबान जानवरों ने क्या गुनाह किया था ?

उन दिनों में अगर कोई युद्ध–अपराध न्यायालय होता, तो सभ्य व्यक्ती बाइबल के परमेश्वर को सबसे बत्तर दोषि सिद्ध करता, ऐसे अपराधी को दुनिया में शायद ही किसी ने देखा हो । उत्पत्ती के किताब में लिखी जल–प्रलय की कहानी अगर सच्छी है तो वह जेहोवा को ऐसे गुनाहों का कसूरवार सिद्ध करता है, जो आज तक किसीने न किया हो । सारें निरपराधी पुरुषों, स्त्रीओं और बच्छों को, जिन्होने उसके खिलाफ पाप नही किये थें, उनको क्यों मार डाला ? पृथ्वी पर पलनेवाले सारें जीव–जंतुओं को और शाकों (पेढ़–पौधों) को क्यों बरबाद किया ? यह सब उसके खिलाफ कोनसा हानी करनेवाले थे ? खुदके असफ़लताओं के लिये सभी इन्सानों और सभी चिज़ों को दोषि ठहराया ।

क्या कोई भी सभ्य समाज इस बात की अनुमती देगा के उनके बच्छों को पाठशालओं में यह सिखाया जाएँ कि कैसे उनके माँ–बाप से, भाई–बहनों से घृणा की जाये, कैसे उनके घरों में अनबन निर्मान किया जाये ? क्या हम उने शान्तीपूर्ण राह पर चलने की सीख देंगे कि खूनखराबे की ? मत्ती के १०वे अध्याय के ३४–३५वे वचन में यीशु खिस्तौस कहता है, "मैं मेल कराने नही, वरन् तलवार चलवाने आया हूँ। मैं तो इसलिए आया कि मनुष्य को उसके पिता, पुत्री को उसकी माता, और बहू को उसकी सास के विरुद्ध कर दूँ;"। लुका के २२वे अध्याय के ३६वे वचन में यीशु सलाह देता है कि उसके शिष्य (प्रेरित) अपने वस्त्र बेचकर तलवार खरीद ले।

हानीकारक होने के वजह से, बाइबल को पाठशालाओं में सिखाने पर प्रतिबंध लगाना चाहिए । अगर मंजूर किया गया तो (बाइबल) हम्हारे बच्छों को बढ़ा होकर सब से खराब कातिल, बलात्कारी, नरभक्षक और अनैतिक इन्सान बना देगी ।

जबकि, सभ्य लोग मृत्यु दंड को बंद कर रहे हैं, परमेश्वर का कानून तो "आँख के बदले आँख" है । २ राजा के १९वे अध्याय में हमे पढ़ने को मिलता है कि, " उसी रात में क्या हुआ, कि परमेश्वर के दूत ने निकलकर असीरियाई

की छावनी में एक लाख पचासी हज़ार पुरुषों को मारा, और सवेरे जब लोग उठे, तब देखा, कि लोथ (लाशे) ही लोथ पढ़ी हैं ।" अगर यीशु मसीहा बगैर किसी अपराध के एक अंजीर के पेढ़ को मार सकता है, तो उससे या उसके पिता जेहोवा से किस प्रकार के न्याय की आशा की जा सकती हैं । परमेश्वर से बढ़कर और कौन पापी हो सकता है जो नरबली और प्राणिओं के बली से खुश होता है ।

बुराई का अधिष्ठान (श्रोत)

दुनिया में फ़ैले बुराई के लिये शैतान या प्रेतात्मा को क्यों इल्ज़ाम दिया जाता है, जबकि परमेश्वर खुद स्वीकार करता है कि वही इस बुराई का जन्मदाता है ? यशायाह के ४५वे अध्याय में, परमेश्वर कहता है कि, "मैं उजियाले का बनानेवाला और अंधियारे का सृजनहार हूँ, मैं शांती का दाता और बुराई को रचता हूँ ।"

प्रख्यात बाइबल विशेषज्ञ मार्शल जे. गौविन के मुताबिक पवित्र किताब कहलानेवाली बाइबल से अधिक मानव को बूराई की और प्रेरित करनेवाला और कोई किताब नही है इस दुनिया में । झूठ बोलना, बेईमानी करना/ठगना, चोरी करना, गुलामी, हत्या करना, नरभक्षन, मज़हबी खूनखराबा, निकट संबंधी से संभोग, छिनाला (वेश्यावृत्ती), व्यभिचार, नग्नता, अश्लीलता, लैंगिक विकृती, क्रूरता और अत्याचार इत्यादि कुछ अपराध है जिनका बाइबल इजाजत देती है और बचाव भी करती है ।

एक रीफ़ार्मिस्ट खिस्ती पादरी ने मुझसे स्वीकार किया था कि उसे हर इतवार को "इतवार की सेवा" (सन्डे सर्विस) के दौरान गिरजाघर में बाइबल पढ़ने के लिये काफी वख्त बरबाद करना पढ़ता है बाइबल में एक अच्छा और उचित अनुच्छेद (पैरा) को चुनने के लिये, जो अश्लीलता, अनैतिकता और बेईमानी से मुक्त हो ।

नैतिक मार्गदर्शिका के रूप में बाइबल दुनिया में सब से खतरनाक किताब है । इस प्रेरित धार्मिक किताब के शिक्षाओं का अनुसरन करने से अच्छा कोई दूसरा रास्ता नही होगा जो बढ़ी आसानी से कैदखाने पहुचा दे । उन ईसाई प्रतिवादी जो बाइबल को पाठशालाओं में सिखाने के लिये हल्ला मचा रहे हैं, उने चाहिएँ कि पहले वे खुद उनके बाइबल को पढ़े, उनकी मांग रखने से पहले ।

बाइबल के वचनों का संकेत

(REFERENCE OF BIBLE VERSES)

मूल अंग्रेजी अवृत्ती में के बाइबल के वचनों की सांकेतिक सुची । (Reference of bible verses from original english version.)

OLD TESTAMENT

1st King, 22:23 "And the Lord said we shall persuade Ahab through a lying spirit. Behold the Lord hath put a lying spirit in the mouth of the prophets."

1st Samuel, 15:3 "Now go and smite Amalek, and utterly destroy all that they have, slay both men and women, infant and suckling, ox and sheep, camel and ass."

2nd King, 19:35 "And it came to pass that night the Angel of the Lord went forth and smote the Assyrians an hundred fourscore and five thousand, and in the morning they were all dead corpses."

2nd Samuel, 6 --- {for: *naked dance of David*}

2nd Samuel, 12:11-12 "I will raise up evil against thee out of thine own house, and I will take thy wife before thine eyes and give her unto thy neighbour and he shall lie with thy wife to thy presence and of all Israel."

Deuteronomy, 13:6-11 "If thy brother or thy son or thy daughter or thy wife of thy bosom entice thee secretly saying let us go and serve another God, thou shalt surely kill him or her, Thou shall stone him with stones till he dies."

Deuteronomy, 20:16 "Thou shalt save alive nothing that breatheth."

Deuteronomy, 21:11-14 "And seest thou among the captives a beautiful woman, and if thou has a desire unto her, you would take her to thee as wife, thou shalt bring her home, and after that go unto her, and be her husband, and she shall be thy wife. And it shall be that of thou have no delight in her, then thou shalt let her go wither she will."

Deuteronomy, 21:18-21 "If a man has a stubborn and rebellious son, who will not obey the voice of his father, or the voice of his mother, then shall his father and his mother lay hold on him, and bring him out unto the elders of the city, and they shall say, this son is stubborn and rebellious, and all the men of his city shall stone him with stones till he dies."

Deuteronomy, 28:53-57 "And thou shalt eat the flesh of thy sons and daughters. The flesh of children, the tender and delicate women among you."

Exodus, 3:21-22 "I will give this people of Israel favour in the sight of the Egyptians, and it will come to pass that when you go, ye will not go empty handed. Every woman amongst you shall borrow of her neighbour's jewels of silver and jewels of gold, and raiments; and ye shall put them upon yours sons and daughters, and ye shall spoil the Egyptians."

Exodus, 5:1 & 3 "Moses and Aaron came and said unto Pharaoh thus said the Lord God of Israel, let my people go, that they may hold a feast unto me in the wilderness. Three days journey into the wilderness to make sacrifice unto me."

Exodus, 12:35-36 "And the children of Israel did according to the world of god, and they borrowed of the Egyptians jewels of silver and jewels of gold, and raiments; and the Lord gave the people favour in the sight of the Egyptians, so that they lent unto them such things as they required. And they ruined the Egyptians."

Exodus, 21:2-6 "If thou buy an Hebrew servant, six years he shall serve, and in the seventh, he shall go out free for nothing. If he were married, then his wife shall go with him. If his master has given him a wife and she has borne him sons and daughters, the wife and her children shall be his

master's property, and he shall go out by himself. And if the servant shall plainly say, I love my wife and my children; I will not go out free, then his master shall bring him unto the judges, and his master shall bore his ear through with an awl, and he shall serve him for ever."

Exodus, 21:20-21 "If a master smites his servant of his maid with a rod, and he died under his hand, he shall be punished. Notwithstanding, if he continues to live a day or two, the master shall not be punished, for he is his money."

Genesis, 7:12 & 20 --- {for: *40 days and 40 nights rained, 15 cubits of deluge*}.

Genesis, 7:21-23 "And all flesh died that moved upon the earth, both of fowl, and of cattle, and of beast, and of every creeping thing that creepeth upon the earth, and every man: All in whose nostrils [was] the breath of life, of all that [was] in the dry [land,] died. And every living substance was destroyed which was upon the face of the ground, both man, and cattle, and the creeping things, and the fowl of the heaven; and they were destroyed from the earth: and Noah only remained [alive,] and they that [were] with him in the ark."

Genesis, 46:3 "I am the God of thy father, fear not to go down into Egypt, for I will there make thee a great nation."

Hosea, 4:14 "I will not punish your daughter when they commit whoredom, nor your wives when they commit adultery."

Isaiah, 3:17 "And the Lord will lay bare their secret parts."

Isaiah, 45:7 "I form the light and create darkness. I make peace and create evil."

Jeremiah, 4:10 "Ah, Lord God, surely thou hast deceived the people of Jerusalem."

Jeremiah, 19:9 "And I will cause them to eat the flesh of their sons and the flesh of their daughters, and they shall eat every one, the flesh of his friend."

Jeremiah, 20:7 "O God thou hast deceived me."

Leviticus, 26:29 "And ye shall eat the flesh of your sons, and the flesh of your daughters shall ye eat." {for: *how god terrorizes, read Leviticus 26:14 to 40*}

Numbers, 31:17-18 "Now therefore kill every male among the little ones, and kill every woman that hath known man by lying with him, save all the virgins and keep them alive for yourselves."

NEW TESTAMENT

1st Corinthians, 7:36 "If any man thinketh that he behaveth unseemly towards his virgin daughter, if she be past the flower of her age, let him satisfy his need. He sinneth not."

1st Corinthians, 7:38 "He that giveth his own virgin daughter in marriage doeth well, but, he that giveth her not in marriage doeth better."

2nd Corinthians, 12:16 "Being crafty, I caught you with guile."

Ephesians, 6:5 "servants, be obedient to them that are your masters."

Galatians, 1:9 "If any man preach any other gospel unto you than ye have received, let him be accursed"

Mark, 12:19 "If a man's brother dies and leaves a widow behind him. and leaves no child, his brother should take the widow, and raise up sees unto his brother."

Mark, 16:16 "He that believeth and is baptized shall be saved, others shall be damned."

Matthew, 10:34-35 "I came not to send peace, but sword. I came to send man against his father, a daughter against her mother, and the daughter-in-law against her mother-in-law."

Matthew, 21:19 "And when he saw a fig tree in the way, he came to it, and found nothing thereon, but leaves only, and said unto it, Let no fruit grow on thee henceforward for ever. And presently the fig tree withered away."

Romans, 3:7 "For if the truth of God hath more abounded through my lie unto his glory."

St. Luke, 19:27 "But those mine enemies, which would not, that I should reign far over them, bring hither and slay them before me."

St. Luke, 22:36 "Then said he unto them, But now, he that hath a purse, let him take [it,] and likewise [his] scrip: and he that hath no sword, let him sell his garment, and buy one."